बाप के साथी और साक्षी बन हलचल के खेल देख अचल बनो

आज अपनी प्यारी दादी का याद-प्यार और समाचार लेते हुए बाबा के पास पहुंची। बापदादा तो दूर से बहुत शक्तिशाली स्वरूप से विश्व की आत्माओं को सकाश देने में बिज़ी थे। बापदादा का फेस बिल्कुल ज्ञान सूर्य के समान चमकता हुए चारों ओर किरणें फैला रहा था। मैं भी इस रूहानी सकाश को लेते हुए नजदीक पहुंची।

बापदादा बोले, आओ मास्टर ज्ञान सागर बच्ची आओ। आप भी सकाश दो। तो मैं भी बाप समान सकाश देने में अपने को रहमदिल स्थिति का अनुभव कर रही थी। कुछ समय बाद बाबा बोले - आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा, आजकल की दुनिया के हलचल का शोर सुनकर सभी के साथ दादी भी सोचती है कि आगे क्या करना है। बाबा बोले बच्ची, अभी जो सेवाओं के प्रोग्राम्स बने हैं उन्हों को चलने दो, इसमें ऐसे जल्दी सोचने की आवश्यकता नहीं है। आगे जो होगा इशारा मिल जायेगा। यह तो बच्चे जानते हैं कि समय की हलचल तो कब तेज, कब धीमी होती रहेगी, लेकिन बच्चों को अपनी श्रेष्ठ याद बल से, सेवा बल से स्वयं सम्पन्न बन

परिवर्तन के समय को समीप लाना है, विश्व की आत्माओं प्रति रहमदिल, दयालू, कृपालू, मर्सीफुल बनना है, तब तो अब तक आपकी और बाप की महिमा में यही पुकार कर रहे हैं – हे देव - कृपा करो, रहम करो, दया करो। यह हलचल आप बच्चों को और ही अचल बनाने के लिए हो रही है। अब दिन प्रतिदिन अचल और हलचल का खेल बढ़ना ही है। दोनों तरफ की कशमकशा का खेल ही तो परिवर्तन लायेगा। आप बच्चे भी परिवर्तन ... परिवर्तन... का गीत गाते हो ना। यह वन्डफुल खेल साक्षी और बाप के साथी बन देखते, कर्मातीत अवस्था के आगे बढ़ते चलो। बाकी सभी जो भी नजारे, समाचार हो रहा है, आपकी परिपक्वता को आगे बढ़ाने के लिए ही हो रहा है। स्वयं को, समय को देख आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो। ऐसा कहते बापदादा जैसे सर्व ब्राह्मणों को दिल में इमर्ज कर मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे थे और मैं भी दृष्टि लेते साकार वतन में पहुंच गई। ओम् शान्ति